उर्दू कैसे लिखें

उर्दू लिपि सीखने की बुनियादी किताब

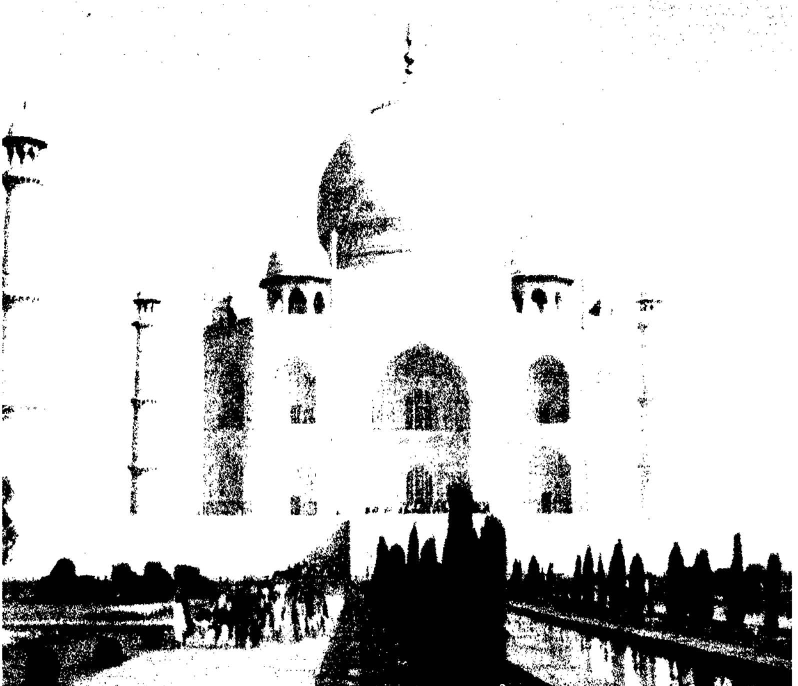

क़ौमी काउंसिल बराए-फ़रोग़-ए उर्दू ज़बान

उर्दू कैसे लिखें

उर्दू लिपि सीखने की बुनियादी किताब

उर्दू कैसे लिखें

उर्दू लिपि सीखने की बुनियादी किताब

गोपी चंद नारंग

क़ौमी काउंसिल बराए फ़रोग़-ए-उर्दू ज़बान
मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उच्च शिक्षा विभाग, भारत सरकार
पश्चिम खंड नं० 1, विंग नं० 6, आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110066

© क़ौमी काउंसिल बराए फ़रोग़-ए-उर्दू ज़बान

प्रथम संस्करण	:	दिसम्बर, 2000
द्वितीय पुनर्मुद्रण	:	दिसम्बर, 2009
कापियाँ	:	1100
मुल्य	:	रू० 47/-
पब्लिकेशन सं०	:	863

उर्दू कैसे लिखें

उर्दू लिपि सीखने की बुनियादी किताब

गोपी चंद नारंग

ISBN :978-81-7587-295-0

क़ौमी काउंसिल बराए फ़रोग़-ए-उर्दू ज़बान

पश्चिम खंड नं० 1, विंग नं० 6, आर. के. पुरम, नई दिल्ली-110066

मुद्रण: हाईटेक ग्राफ़िक्स, 167/8, सोना प्रिया चेम्बर्स, जुलैना, नई दिल्ली-110025

इस पुस्तक की छपाई 70 GSM, TNPL Maplitho पेपर पर की गई है।

प्राक्कथन

कौमी काउन्सिल बराए फ़रोग़-ए-उर्दू ज़बान, उर्दू भाषा के विकास, विस्तार एवं प्रचार के लिए मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार का उत्तरदायी संस्था है। कौमी उर्दू काउन्सिल का मुख्य उद्देश्यः (1) उर्दू भाषा को प्रोत्साहन देना, उसके विकास एवं प्रसार के लिए कार्य करना। (2) ऐसे कार्य करना जिनसे उर्दू भाषा में वैज्ञानिक एवं टेक्नॉलोजी सम्बन्धी ज्ञान उपलब्ध हो, तकनीकी विकास हो और आधुनिक युग के नवीन विचारों को प्रोत्साहन मिले। (3) उर्दू भाषा और शिक्षा से सम्बन्धित मामलों में भारत सरकार को परामर्श देना। (4) उर्दू भाषा को बढ़ावा देने के लिए अन्य ऐसे कार्य करना जिन्हें कौमी उर्दू काउन्सिल उर्दू के विकास के लिए उचित समझे। इसके साथ ही काउन्सिल का यह भी उत्तरदायित्व है कि उर्दू के माध्यम से शिक्षा का विकास गुणवत्ता के साथ राष्ट्रीय स्तर पर हो।

उर्दू भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में राष्ट्रीय भाषा के रूप में सम्मिलित किया गया है। ऐसे बहुत से देशवासी हैं जो उर्दू भाषा जानते-बोलते हैं, परन्तु वे उसकी लिपि से अनभिज्ञ हैं। आशा है, कि प्रो. गोपी चन्द नारंग द्वारा लिखी गई यह पुस्तक, भारत की इस सुंदर लिपि-उर्दू को सीखने के सभी इच्छुक जनों के लिए अति उपयोगी सिद्ध होगी।

डा.एम. हमीदुल्लाह भटट्
निदेशक

प्रस्तावना

उर्दू लिपि सीखने की यह बुनियादी किताब उन लोगों के लिए है जो हिन्दी, उर्दू बोल तो सकते हैं लेकिन उर्दू लिपि नहीं जानते और कम से कम समय में उर्दू लिखना सीखना चाहते हैं। यह किताब दूरस्थ पद्धति द्वारा स्वतः शिक्षण के लिए तैयार की गई है। इसमें वर्णों और लिपि संबंधित बुनियादी धारणाओं से धीरे धीरे और क्रमबद्ध चरणों में परिचय कराया गया है। शब्दों और वाक्यों को बार बार दोहराया गया है ताकि वे शिक्षार्थी के मन में बैठ जाएँ। इस बुनियादी किताब के साथ एक अभ्यास पुस्तिका भी प्रस्तुत की जा रही है जिसमें अन्य संबंधित विषयों को और स्पष्ट किया गया है। शिक्षार्थी को पाठ दिए गए क्रम से पढ़ने चाहियें और उनसे संबंधित अभ्यास कार्य भी साथ साथ अभ्यास पुस्तिका में पूरे करने चाहियें। अभ्यास पुस्तिका में पठन और लेखन संबंधी अभ्यास कार्य काफ़ी मात्र में हैं जिनको अगर ठीक से पूरा किया जाए तो उर्दू लिपि सीखना न केवल आसान लगेगा बल्कि उसमें मज़ा भी आएगा।

उर्दू लिपि का परिचय वैज्ञानिक विधि से क्रमबद्धतानुसार कराया गया है। उर्दू वर्णमाला सीखने का इच्छुक जो इसे परम्परानुसार दिए गए क्रम में सीखना चाहता है उसके लिए एक तालिका में परम्परागत क्रम भी दिया गया है। इसके अतिरिक्त उर्दू वर्णमाला का परिचय धीरे धीरे सुव्यवस्थित क्रमबद्ध तरीक़े से कराया गया है। उर्दू के वर्ण दो प्रकार के हैं, संयोजक और असंयोजक। पाठ में पहले असंयोजक वर्णों से अवगत कराया गया है जो सीखने में सरल हैं। इसी तरह सरल संयोजित वर्णों से भी आरंभ में परिचय कराया गया है। उन संयोजित वर्णों और नियमों को, जो तुलना में कुछ कठिन हैं, उनसे परिचय बाद में कराया गया है। सीखने का इच्छुक अगर पाठों को क्रमानुसार पढ़े और साथ ही निर्देशानुसार पठन और लेखन का अभ्यास करे तो उसे

उर्दू लिपि सीखने में कोई कठिनाई नहीं होगी। कोशिश की गई है कि उर्दू के वर्णों का परिचय वस्तुओं के नामों और उनके चित्रण के साथ दिया जाए ताकि लिपि सीखना रोचक और कम बोझिल हो जाए।

आरंभ में ही उर्दू लिपि के बारे में कुछ ज़रूरी बातें भूमिका में समझा दी गई हैं। शिक्षार्थी को चाहिए कि वह इसे पाठ्य पुस्तक का अध्ययन करने से पहले ज़रूर पढ़ ले, यद्यपि लिपि संबंधित सब की सब धारणाएँ तो सभी पाठ और अभ्यास पूरा करने के बाद ही स्पष्ट होंगी। वास्तव में लिपि का परिचय प्रथम बारह पाठों में करा दिया गया है। इस प्रकार अगर सीखने वाला एक सप्ताह में एक पाठ में पारंगत हो सकता है तो उर्दू लिपि को पूर्णतया वह तीन महीनों में सीख सकता है। याद रहे कि प्रेरणा और सामर्थ्य का सीखने की प्रक्रिया में अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान है। शिक्षार्थी को सलाह दी जाती है कि लिखने का अभ्यास अधिकतम करे क्योंकि पठन को लेखन ही मज़बूत करता है।

पाठ्य पुस्तक में नए वर्ण और उनके संयोजित रूप लाल ख़ानों में दर्शाए गए हैं। इनको बार बार दोहराया गया है ताकि पाठ के अंत तक पहुँचते पहुँचते शिक्षार्थी नए तत्वों को सरलता से पहचान सके और पढ़ सके। परिपक्वता के लिए हर पाठ के अंत में नए वर्ण और उनके संयोजित रूपों की तालिका एक बार फिर दर्शायी गई है।

उर्दू वर्णों के नाम ख़ानों के ऊपर दिए गए हैं और उनकी ध्वनि नीचे। उर्दू लिपि में कई द्विक और त्रिक वर्ण हैं, जहाँ एक वर्ण एक से अधिक ध्वनियों का सूचक बनता है। इसी तरह एक ध्वनि के लिए एक से ज़्यादा अक्षर भी हैं। उल्लेख के लिए उर्दू वर्णमाला की संपूर्ण तालिका भी दी गई है। इसके इलावा उर्दू की स्वर व्यवस्था, लिपि के अन्य चिह्न, वर्णमाला का परम्परागत क्रम और उर्दू के विभिन्न वर्णों के रूप और जोड़ों की तालिकाएं भी प्रस्तुत कर दी गई हैं। ये सब

पढ़ने की प्रक्रिया में उपयोगी सिद्ध होंगी।

अभ्यास पुस्तिका में अभ्यास और उत्तर भरने के लिए आसमानी रंग के ख़ानों को प्रयोग में लाया गया है। लिखने की प्रक्रिया को सुगम बनाने के लिए तीरों द्वारा दिशा निर्देश दिए गए हैं। नए शब्दों और वाक्यों को बिंदुओ के रूप में लिखा गया है ताकि पेंसिल चलाकर अच्छी तरह अभ्यास करने में आसानी हो।

प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक की उर्दू सामग्री राष्ट्रीय शैक्षिक एवं अनुसंधान प्रशिक्षण संस्थान द्वारा प्रकाशित मेरी पुस्तक *"उर्दू की नई किताब"* से अपनाई गई है। उल्लेखित पुस्तक व्यापक रूप से भारत की कई स्कूली प्रणालियों में पढ़ाई जा रही है। मैं डॉ. एम. हमीदुल्लाह भट, निदेशक, एन.सी.पी.यू.एल., तथा कार्य समिति के सभी सदस्यों को धन्यवाद देना चाहूँगा जिनके सहयोग ही से प्रस्तुत प्रॉजेक्ट समय पर पूरा हो सका।

नई दिल्ली
मार्च, 2001

गोपी चंद नारंग

विषय सूची

प्राक्कथन		5
प्रस्तावना		7
भूमिका : उर्दू लिपि		13
उर्दू वर्णमाला एवं उसकी लिप्यंतरण विधि		19
उर्दू वर्णों का क्रम		22
अभ्यास पाठ 1	آم	25
अभ्यास पाठ 2	دس رس	29
अभ्यास पाठ 3	ڈول	33
अभ्यास पाठ 4	آب آپ رات بات	37
अभ्यास पाठ 5	پان تان ڈاک ناک	42
अभ्यास पाठ 6	آج ناچ آگ جاگ	48
अभ्यास पाठ 7	درزی آیا	53
अभ्यास पाठ 8	اب گھر چل	58
अभ्यास पाठ 9	لو رُت بدلی	64
अभ्यास पाठ 10	سورج ڈوبا رات ہوئی	70
अभ्यास पाठ 11	میلے کی سیر	76
अभ्यास पाठ 12	ہماری راج دھانی	83
अभ्यास पाठ 13	عید مبارک	89
अभ्यास पाठ 14	اردو حروف	93
अभ्यास पाठ 15	سارے جہاں سے اچھا	97
उर्दू वर्णों के विभिन्न आकारों की तालिका		101
उर्दू के स्वर चिह्न, विराम चिह्न आदि और विशेषक चिह्न		103

भूमिका :
उर्दू लिपि

उर्दू एक भारतीय-आर्यायी (Indo-Aryan) भाषा है। इसकी लिपि फ़ारसी अरबी से आई है परन्तु इसमें कुछ ऐसे परिवर्तन हुए हैं जो महाप्राणता, मूर्धन्यता और अनुनासीकरण को व्यक्त करते हैं। यह लिपि प्रवाही लेखन लिपि है। इसकी एक विशेषता है कि इस लिपि में आम तौर से लघु स्वर नहीं दर्शाए जाते परन्तु नीचे या ऊपर विशेषक चिह्न देकर व्यक्त किये जा सकते हैं। एक और महत्वपूर्ण लक्षण यह भी है कि इसके वर्णों में एक ही ध्वनि को दर्शाने के लिए द्विक और त्रिक वर्ण विद्यमान हैं। इन वर्णों का प्रयोग इसलिए भी ज़रूरी है क्योंकि अरबी फ़ारसी में यह अर्थपूर्ण हैं। उर्दू लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती है। लिपि के वर्ण दो प्रकार के हैं : जुड़ सकने वाले (संयोजित) और न जुड़ सकने वाले (असंयोजित)। शब्द या अक्षर में जुड़ सकने वाले अगले वर्ण के साथ जुड़ जाते हैं जबकि न जुड़ सकने वाले वर्ण आगामी वर्ण के साथ नहीं जोड़े जा सकते अपितु सभी वर्ण अपने से पहले आने वालों के साथ जुड़ सकते हैं। उर्दू लिपि लिखने और छापने की आम शैली को नसतालीक़ अर्थात ख़ूबसूरत कहते हैं। क्योंकि यह लिपि प्रवाहगत है, इसलिए इसके बहुत से वर्णों के तीन रूप हैं, आरंभिक - जब वह शुरू में आते हैं, मध्य - जब वह मध्य में आते हैं, तथा अंतिम - जो शब्द के अंत में जोड़े जाते हैं। अंतिम अजोड़ रूप वही होता है जो वर्ण का बुनियादी रूप है।

उर्दू लिपि के वर्णों के चारों रूप एक तालिका में किताब के अंत में संदर्भ के तौर पर दे दिये गये हैं।

स्वर

उर्दू में दीर्घ स्वर अलिफ़ (ا), अलिफ़ मद (آ), वाव (و), छोटी ये

(ی) और बड़ी ये (ے) द्वारा व्यक्त किये जाते हैं। शब्दारंभ में अलिफ़ के ऊपर लगाया जाने वाला मद दीर्घ /आ/ का सूचक है। ये और वाव जब आरंभ में आते हैं तो अर्ध स्वर /य/ और /व/ के द्योतक बनते हैं, जैसे, यहाँ (یہاں) और वहाँ (وہاں)। वाव (و), छोटी ये (ی) और बड़ी ये (ے) अन्य संदर्भों में दीर्घ स्वर के सूचक हैं, इनका विवरण नीचे दिया गया है :

वाव और ये

उर्दू में वाव (و) चार निम्नलिखित ध्वनियों को दर्शाता है, जैसे :

وہاں	جو	جُو	جَو
वहाँ	जो	जू	जौ

शब्दारंभ में वाव ये की तरह अर्ध स्वर के रूप में आता है, जैसे, शब्द وہاں /वहाँ/ में। परन्तु शब्द के मध्य और अंत में वाव तीन दीर्घ स्वरों का प्रतीक होता है, जैसे, /ओ/, /ऊ/ अथवा /औ/। दीर्घ /ऊ/ की ध्वनि व्यक्त करने के लिए वाव को उल्टे पेश (ؤ) के साथ दर्शाया जाता है; /औ/ ध्वनि को व्यक्त करने के लिए वाव को पूर्ववर्ती ज़बर (وَ) के साथ दर्शाया जाता है; और अचिह्नित वाव (و) /ओ/ ध्वनि को दर्शाता है जैसा कि उपरोक्त उदाहरणों में दिखाया गया है।

इसी तरह उर्दू में ے/ی (ये) भी नीचे प्रस्तुत की गई चार ध्वनियों को दर्शाता है :

یہاں	میرا	مِیرا	مَینا
यहाँ	मेरा	मीरा	मैना

शब्दारंभ में ये भी वाव की तरह अर्ध स्वर का द्योतक बनता है, उदारहण- یہاں /यहाँ/। परन्तु शब्द के मध्य और अंतिम स्थानों में

यह विभिन्न तीन स्वरों /ए/, /ई/ और /ऐ/ को दर्शाता है। /ई/ ध्वनि के लिए ये खड़े ज़ेर के साथ आता है जैसे, مِیرا /मीरा/; /ऐ/ ध्वनि दर्शाने के लिए ये को पूर्ववर्ती ज़बर के साथ प्रयोग में लाया जाता है, जैसे, مَینا /मैना/; जबकि /ए/ ध्वनि अचिह्नित ये के साथ दर्शाई जाती है, जैसे, میرا /मेरा/।

ह्रस्व स्वर

उर्दू में ह्रस्व स्वर वर्णों के ऊपर या नीचे विशेषक चिह्न लगा कर दिखाये जाते हैं :

ـَـ वर्ण के ऊपर लगे चिह्न को 'ज़बर' कहते हैं और यह आगामी /अ/ का सूचक है।

ـِـ वर्ण के नीचे लगे चिह्न को 'ज़ेर' कहते हैं और यह आगामी /इ/ को दर्शाता है।

ـُـ वर्ण के ऊपर आये चिह्न को 'पेश' कहते हैं और यह आगामी ह्रस्व /उ/ को दर्शाता है।

जब अलिफ़ किसी शब्द या अक्षर के आरंभ में आता है तो इसका मतलब है कि वह शब्द या अक्षर स्वर से आरंभ होता है। वाँछित ह्रस्व स्वर को ज़ेर, ज़बर और पेश से दिखाया जाता है, जैसे, اِس, اَب, اُن; अपितु ह्रस्व स्वर केवल उस समय जब ज़रूरी हों तब लगाए जाते हैं। आम तौर पर उर्दू पाठक अपनी ज़बान को ह्रस्व स्वरों के बिना ही पढ़ सकते हैं। उर्दू स्वरों की तालिका किताब के अंत में संदर्भ के लिए दे दी गई है।

नून गुन्ना, दो चश्मी हे और हम्ज़ा

निम्नलिखित तीन वर्ण, हालाँकि परम्परानुसार उर्दू वर्णमाला में नहीं दर्शाए जाते लेकिन इनका सीखना आवश्यक है :

1. नून ग़ुन्ना (ں) अर्थात बिना नुक़्ते का नून स्वर की अनुनासिकता का सूचक है, जैसे جاؤں /जाऊँ/; अपितु शब्द के मध्य में अनुनासिकता पूरे नून से दर्शाई जाती है अथार्त नुक़्ते के साथ, जैसे اونٹ /ऊँट/।

2. दो चश्मी हे (ھ) उर्दू का एक विशेष लक्षण है, और यह महाप्राणता का सूचक है, जैसे گھوڑا /घोड़ा/, تھوڑا /थोड़ा/।

3. अरबी में हम्ज़ा कंठ के निचले भाग से उच्चरित होता है परन्तु उर्दू लेखन में इसका प्रयोग आमतौर पर शब्द में प्रयुक्त दो स्वरों के साथ साथ होने का सूचक है। इसके अतिरिक्त उर्दू में इस चिह्न की अपनी अलग से कोई ध्वनि नहीं है।

िक आदि चिह्न

निम्नलिखित वर्ण उर्दू की एक ही ध्वनि के सूचक हैं :

(1) ते (ت) और तोए (ط) दोनो /त/ ध्वनि के सूचक हैं।

(2) से (ث), सीन (س) और स्वाद (ص) /स/ ध्वनि के सूचक हैं।

(3) छोटी हे (ہ) और बड़ी हे (ح) दोनों /ह/ ध्वनि के सूचक हैं।

(4) ज़ाल (ذ), ज़े (ز), ज़्वाद (ض) और ज़ोए (ظ), यह चारों /ज़/ ध्वनि के सूचक हैं।

ेन (ع)

ऐन (ع) जो अरबी भाषा में कठ के निचले भाग से उच्चरित संघर्षी व्यंजन हैं, उर्दू में आमतौर पर यह शब्दों के अन्य स्वरों के साथ

मिलकर एक स्वर रूप में आता है। सामान्यत: यह स्वर वर्ण या स्वर सूचक के साथ विलय हो जाता है, जैसे,

(क) प्रारंभ में : औरत (عورت) इज़्ज़त (عزت)

(ख) मध्य में : मालूम (معلوم) बाद (بعد) शोला (شعلہ)

(ग) अंत में : जमा (جمع) मौज़ू (موضوع)

हे (ہ)

हे (ہ) /ह/ का द्योतक है, परन्तु बहुत सी स्थितियों में अंतिम स्थान में मंद रूप से उच्चरित होता है और ह्रस्व स्वर का सूचक बन जाता है, उदाहरणार्थ,

न (نہ) पता (پتہ) बल्कि (بلکہ)

परन्तु जहाँ /ह/ पूरी तरह उच्चरित होता है वहाँ /ह/ के नीचे छोटा हुक लगाया जाता है, उदाहरणार्थ,

कह (کہہ) सह (سہہ) बह (بہہ)

ख़ामोश वाव (و)

ख़े (خ) के बाद आनेवाला वाव (و) केवल फ़ारसी और अरबी से कुछ आए हुए शब्दों में उच्चरित नहीं होता है। इसे वाव के नीचे छोटी रेखा लगाकर व्यक्त किया जाता है, जैसे,

खुश	خوش
खुद	خود
खुर्शीद	خورشید
ख़ाब	خواب

विशेष रूढ़ियाँ

1. शब्दारंभ में छोटी हे (ہ) + अलिफ़ (ا) को दोहरे हुक के साथ लिखा जाता है, उदाहरणार्थ,

हाथी	ہاتھی

2. काफ़ (ک) अथवा गाफ़ (گ) + अलिफ़ को एक छोटे गोलाकार के साथ लिखा जाता है, उदाहरणार्थ,

काल	کال
गाल	گال

3. लाम (ل) से पहले आने वाले काफ़ (ک) अथवा गाफ़ (گ) भी इसी तरह लिखे जाते हैं, उदाहरणार्थ,

कुल	کُل
गुल	گُل

4. इ + अर्ध स्वर य + स्वर की संघटना में हम्ज़ा की बजाए मध्य में /य/ को व्यक्त करने वाले दो नुक़्ते लगाए जाते हैं, जैसे,

चाहि + ये	چاہیے
दीजि + ये	دیجیے

5. हम्ज़ा (ء) को उ + आ की संघटना में भी नहीं लिखा जाता, उदाहरणार्थ,

हुआ	ہوا
छुआ	چھوا

संख्यांक

1	2	3	4	5	6	7	8	9	0
۱	۲	۳	۴	۵	۶	۷	۸	۹	۰

❖ ❖ ❖

उर्दू वर्णमाला एवं उसकी लिप्यंतरण विधि

उर्दू वर्णमाला के 36 वर्णों का परम्परागत क्रम निम्नलिखित है :

नाम	*उर्दू के वर्ण*	*ध्वनि*
अलिफ़	ا	अ/आ
बे	ب	ब
पे	پ	प
ते	ت	त
टे	ٹ	ट
से	ث	स
जीम	ج	ज
चे	چ	च
बड़ी हे	ح	ह
ख़े	خ	ख़
दाल	د	द
डाल	ڈ	ड
ज़ाल	ذ	ज़
रे	ر	र
ड़े	ڑ	ड़
ज़े	ز	ज़
ज़	ژ	ज़
सीन	س	स

शीन	ش	श	
स्वाद	ص	स	
ज़्वाद	ض	ज़	
तोए	ط	त	
ज़ोए	ظ	ज़	
ऐन	ع	भूमिका देखिए	
ग़ैन	غ	ग़	
फ़े	ف	फ़	
क़ाफ़	ق	क़	
काफ़	ک	क	
गाफ़	گ	ग	
लाम	ل	ल	
मीम	م	म	
नून	ن	न	नीचे देखें
वाव	و	व	नीचे देखें
छोटी हे	ہ	ह	नीचे देखें
छोटी ये	ی	य/ई	नीचे देखें
बड़ी ये	ے	य/ए, ऐ	नीचे देखें

अलिफ़ मद

अलिफ़ के ऊपर लगाया चिह्न (˜) शब्दारंभ में दीर्घ /आ/ का सूचक है। परन्तु शब्द के मध्य और अंत में अलिफ़ अपने आप में ही दीर्घ /आ/ का सूचक बनता है।

नून ग़ुन्ना, दो चश्मी हे और हम्ज़ा

निम्नलिखित तीन वर्ण, हालाँकि परम्परानुसार उर्दू वर्णमाला में नहीं दर्शाए जाते हैं, लेकिन इनको सीखना आवश्यक है :

1. नून ग़ुन्ना (ں) अर्थात बिना नुक़्ते का नून स्वर की अनुनासिकता का सूचक है, जैसे جاؤں /जाऊँ/; अपितु शब्द के मध्य में अनुनासिकता पूरे नून से दर्शाई जाती है अर्थात नुक़्ते के साथ, जैसे اونٹ /ऊँट/।
2. दो चश्मी हे (ھ) उर्दू का एक विशेष लक्षण है, और यह महाप्राणता का सूचक है, जैसे گھوڑا /घोड़ा/, تھوڑا /थोड़ा/।
3. अरबी में हम्ज़ा कंठ के निचले भाग से उच्चरित होता है परन्तु उर्दू लेखन में इसका प्रयोग आमतौर पर शब्द में प्रयुक्त दो स्वरों के साथ साथ होने का सूचक है। इसके अतिरिक्त उर्दू में इस चिह्न की अपनी अलग से कोई ध्वनि नहीं है।

वाव और ये

वाव (و) छोटी ये (ی) और बड़ी ये (ے) शब्दारंभ में अर्ध स्वर /व/ और /य/ के सूचक हैं, शब्द के अन्य स्थानों में यह दीर्घ स्वरों के सूचक बनते हैं। विवरण के लिए भूमिका देखें।

❖ ❖ ❖

उर्दू वर्णों का क्र

उर्दू के वर्णों को बहुत सरलता से उनकी समरूपता अनुसार कुछ ही वर्गों में बाँटा जा सकता है, और इनकी भिन्नता नुक़्तों को वर्ण के ऊपर या नीचे लगाने से होती है।

उर्दू के वर्णों को परम्परागत विधि से याद करने के लिए निम्नलिखित क्रम लाभदायक सिद्ध होगा :

ا
अलिफ़

ث	ٹ	ت	پ	ب
से	टे	ते	पे	बे

خ	ح	چ	ج
ख़े	बड़ी हे	चे	जीम

ژ	ز	ڑ	ر	ذ	ڈ	د
ज़	ज़े	ड़े	रे	ज़ाल	डाल	दाल

ض	ص	ش	س
ज़्वाद	स्वाद	शीन	सीन

ظ	ط
ज़ोए	तोए

غ	ع
ग़ैन	ऐन

ق	ف
क़ाफ़	फ़े

		گ	ک
		गाफ़	काफ़
و	ن	م	ل
वाव	नून	मीम	लाम
	ے	ی	ہ
	बड़ी ये	छोटी ये	छोटी हे

❖ ❖ ❖

पाठ 1

❖ उर्दू लिपि दाएँ से बाएँ लिखी जाती है।

❖ हर पाठ में नए अक्षरों को लाल ख़ानों में दिखाया गया है। इन को ध्यान से पढ़िये। अक्षरों के नाम ख़ानों के ऊपर दिये गए हैं और ध्वनि नीचे लिखी गई है :

❖ नीचे दिए गए अक्षरों को पाँच बार ऊँचे स्वर में पढ़ें :

छोटी ये	वाव	दाल	मीम	अलिफ़ मद	अलिफ़
ی	و	د	م	آ	ا
ई	ओ	द	म	आ	अ

❖ नीचे लिखे हुए शब्दों को पाँच बार ऊँचे स्वर में पढ़ें :

آم

आम

دو	آم	دادی	دادا
दो	आम	दादी	दादा

❖ इन शब्दों को आप पढ़ना सीख चुके हैं। अब आप नीचे लिखे वाक्यों को पढ़ सकते हैं। अभ्यास के लिए इन्हें दो तीन बार फिर से पढ़ें :

آم دو

دادا آم دو

دادی آم دو

دادا   آم   دو

دادا   آم   دو   دو

دادی   آم   دو   دو

❖ ❖ ❖

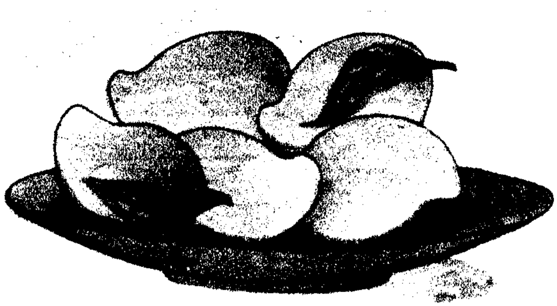

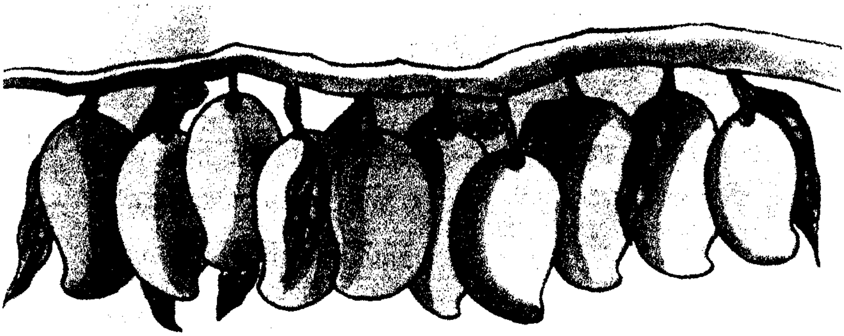

पाठ - 2

❖ यह तो आप जानते ही हैं कि नए उर्दू अक्षर जो लाल ख़ानों में दिए गए हैं उनके नाम ख़ानों के ऊपर और ध्वनि नीचे लिखी गई है। इनको ध्यान से पढ़ें :

बड़ी ये	रे	सीन
ے	ر	س
ए	र	स

❖ नीचे लिखे शब्दों को पाँच बार ऊँचे स्वर में पढ़ें :

رس	دس
रस	दस
دار	دام
दार	दाम
دے	دارا
दे	दारा

❖ इन शब्दों को आप पढ़ना सीख चुके हैं। अब आप नीचे लिखे वाक्यों को आसानी से पढ़ सकते हैं। अभ्यास के लिए इन्हें दो तीन बार फिर से पढ़ें :

آم دو

رس دار آم دو

دس رس‌دار آم دو

دارا دس رس‌دار آم دو

دادا دس رس‌دار آم دو

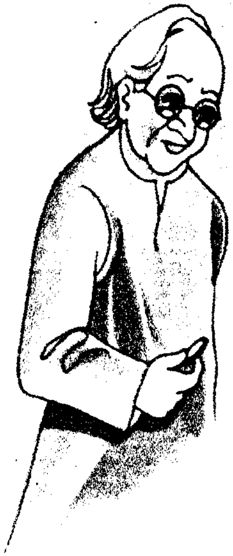

دادا دام دو

دادی دام دو

دادا دام دے دو

دادی دام دے دو

دس رس دار آم دے دو

❖ ❖ ❖

- 3

❖ ا (अलिफ़), د (दाल), و (वाव) और ر (रे) जिन्हें आप पहले पढ़ चुके हैं, इन्हें non-connectors कहते हैं, यानी ये अपने से बाद वाले अक्षर के साथ मिला कर नहीं लिखे जाते। ڈ (डाल) भी इसी तरह का अक्षर है जबकि ل (लाम) connector है, यानि यह अपने से बाद वाले अक्षर से मिला कर लिखा जा सकता है। इस पाठ में आप देखेंगें कि ل अपने बाद वाले अक्षरों से मिला कर किस तरह लिखा जाता है।

❖ नीचे लिखे शब्द और अक्षरों को ऊँचे स्वर में पढ़ें :

ڈول

डोल

लाम	वाव	डाल
ل	و	ڈ
ल	ओ	ड

❖ नीचे लिखे शब्दों को ऊँचे स्वर में पढ़ें और ध्यान दें कि ل किस तरह अन्य अक्षरों से जुड़ता है :

ला = अलिफ़ + लाम ← लाम

لا   ا + ل ← ل

لا   ڈول   لا

لال ڈول لا

دو ڈول لا

دارا دو ڈول لا

लो = वाव + लाम ← लाम

ل ← ا + و لو

لو ڈول لو

لال ڈول لو

دادی ڈول لو

دادی لال ڈول لو

ली = छोटी ये + लाम ← लाम

ل ← ا + ی لی

لالی آ

لالی ڈول لا

لالی دو ڈول لا

لالی لال ڈول لا

ले = बड़ी ये + लाम ← लाम

ل ← لـ + ے = لے

لے ڈول لے

دو ڈول لے

لالی ڈول لے

دارا ڈول لے

❖ नीचे लिखे अक्षरों एवं उनके जोड़ों पर दोबारा ध्यान दें और ऊँचे स्वर में पढ़ें :

				लाम	डाल
لے	لی	لو	لا	ل	ڈ
ले	ली	लो	ला	ल	ड

❖ ❖ ❖

पाठ - 4

❖ नीचे लिखे अक्षरों को ध्यान से पढ़ें और देखें कि वे शब्दों में किस तरह जोड़े जाते हैं :

	बे + अलिफ़	ते		पे		बे	
ت	با	ت	را	پ	آ	ب	آ
त	बा	त		प		ब	

❖ नीचे लिखे शब्दों को पढ़ें और ध्यान से देखें कि ب (बे), پ (पे) और ت (ते) किस तरह अपने बाद में आने वाले अलिफ़ से जुड़ते हैं :

آپ	آب
आप	आब

رات	پات	بات
रात	पात	बात

❖ नीचे लिखे शब्दों को ध्यान से पढ़ें और उनके जोड़ देखें :

رات	آپ	آب
रात	आप	आब

با	ا	+	بـ	←	ب
बा	आ		ब		ब
تا	ا	+	تـ	←	ت
ता	आ		त		त

تالا

تالا لا

تارا آ تالا لا

آ تارا آ تالا لا

دو تالے لا

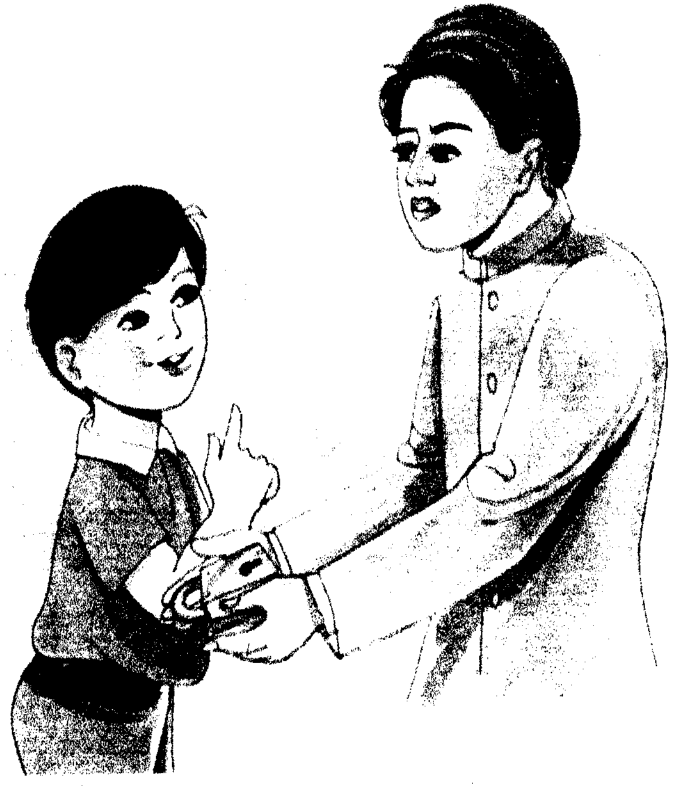

❖ अब अभ्यास के लिए नीचे लिखे वाक्यों को दो तीन बार पढ़ें :

بابا آ

تالا لا

بابا تالا لا

پاپا آ

تالا لا

پاپا تالا لا

دو تالے لا

❖ नए जोड़ों का चार्ट पेश है। ध्यान दें और ऊँचे स्वर में पढ़ें:

تـ	←	ت	پـ	←	پ	بـ	←	ب
↓			↓			↓		
تا			پا			با		

❖ शब्दावली :

आब - पानी

❖ ❖ ❖

पाठ - 5

❖ नीचे दिए गए अक्षर ن (नून) और ک (काफ़) को ध्यानपूर्वक पढ़िये और देखिये कि ये किस तरह अपने से बाद आने वाले अक्षरों से जुड़ते हैं :

नून + बड़ी ये	नून + छोटी ये		नून + अलिफ़	नून
نے	نی		نا	ن
ने	नी		ना	न
کے	کی	کو	کا	ک
के	की	को	का	क

❖ नीचे लिखे शब्दों को ग़ौर से पढ़ें और ن (नून) के आरंभिक एवं अंतिम रूप पर ध्यान दें :

نان	پان
नान	पान
ناک	ڈاک
नाक	डाक

❖ अक्षरों के जोड़ों पर ध्यान दें और इन्हें ऊँचें स्वर में दो तीन बार पढ़ें :

का अलिफ़ + काफ़

ک ← کـ + ا کا کا کالا

को वाव + काफ़

ک ← کـ + و کو کو کورا

की छोटी ये + काफ़

ک ← کـ + ی کی کی کاکی

के बड़ी ये + काफ़

ک ← کـ + ے کے کے کاکے

❖ अब आप नीचे लिखे वाक्यों को आसानी से पढ़ सकते हैं। अभ्यास के लिए इन्हें दो तीन बार ध्यान से पढ़ें :

پان دو

لالی کو پان دو

نان دو

دادی کو نان دو

دارا نان لو دادا پان لو

❖ ن (नून) के विभिन्न जोड़ों पर ध्यान दें :

ن ← ﻧ + ا   نا   نانا   نان

ن ← ﻧ + ی   نی   نانی   رانی

ن ← ﻧ + ے   نے   پانے   آنے

نانا   پان   لو

نانی   پان   لو

رانی   کو   نان   دو

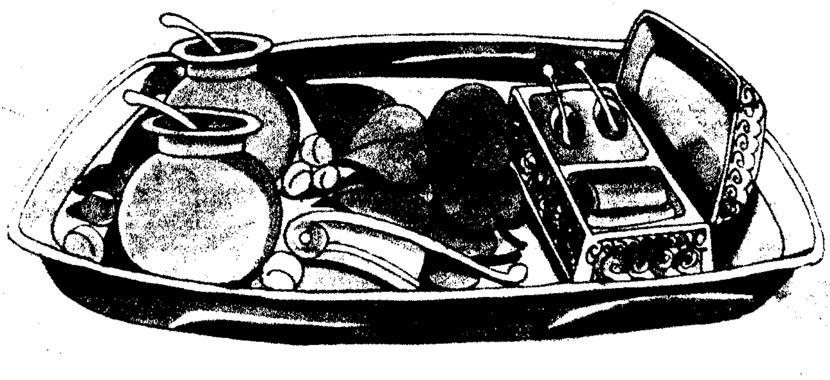

❖ नीचे लिखे वाक्यों को दो बार पढ़ें :

تارا کو پانی دو

نانا نانی کو پانی دو

ڈاک

دارا آ ڈاک لا

رام کو ڈاک دو

❖ इस पाठ में आपने जो नए जोड़ सीखे हैं वे नीचे दर्ज हैं। इन्हें ध्यान से देखें और पढ़ें :

ن ← ﻧ   نا   نی   نے

ک ← ﻛ   کا   کو   کی   کے

❖ ❖ ❖

पाठ - 6

- इस पाठ में ج (जीम), چ (चे) और گ (गाफ़) लिखना सिखाया गया हैं। इन्हें ध्यान से पढ़ें और देखें कि बाद में आने वाले अक्षरों से ये किस तरह मिला कर लिखे जाते हैं :

गाफ़+अलिफ़		जीम+अलिफ़	गाफ़		चे		जीम	
گا	گ	جا	گ	آ	چ	ا	ج	آ
गा		जा			च		ज	

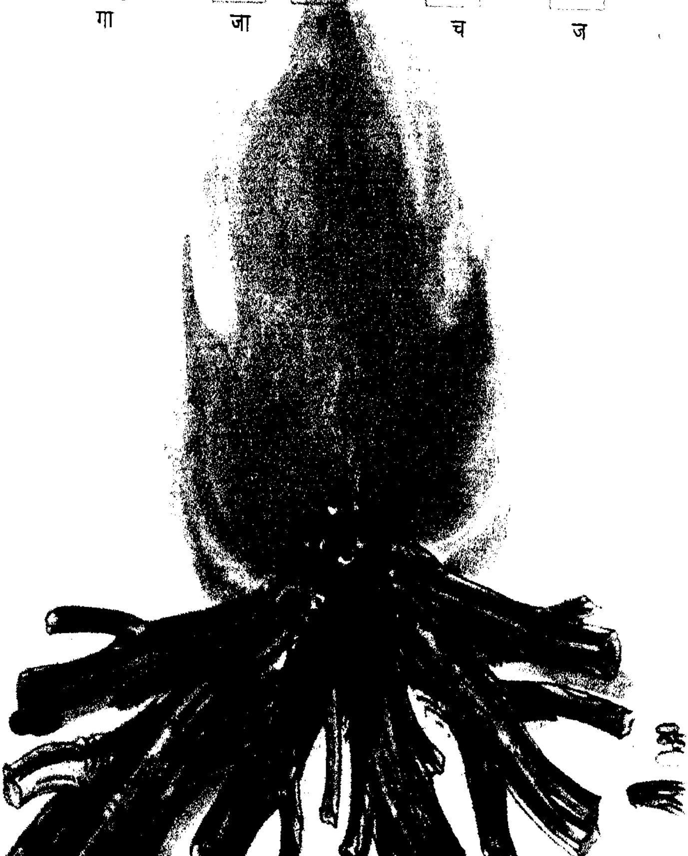

❖ नीचे लिखे शब्दों को पढ़ें और लिखने का अभ्यास करें :

ناچ	آج
नाच	आज
جاگ	آگ
जाग	आग

❖ नीचे लिखे वाक्यों को ऊँचे स्वर में पढ़ें :

آ

آج آ

آج آم لا

آج دس آم لا

❖ देखें ج और چ किस तरह अपने बाद आने वाले अक्षरों से जुड़ते हैं:

ج ← جـ +ا جا

جاگ

تارا جاگ

جا ڈول لے آ

دو ڈول لے آ

تارا جا ڈول لے آ

چ ← چ +ا چا چی چے

رانی ناچی

راجا ناچا

راجا رانی ناچے

❖ ध्यान दें कि گ (गाफ़) भी उसी तरह बाद के अक्षरों से मिला कर लिखा जाता है जैसे ک (काफ़), जो आप पहले सीख चुके हैं:

گا	ا	گ	←	گ
گی	ی	گ	←	گ
گے	ے	گ	←	گ

❖ अब अभ्यास के लिए नीचे लिखे पाठ को दो तीन बार ध्यान से पढ़ें:

گا

راجا گا

آ راجا

لالا جاگا

لالی جاگی

بابا جاگے

پاپا جاگے

❖ इस पाठ में इन नए जोड़ों को आप सीख चुके हैं। ध्यान से पढ़ें और अभ्यास करें :

ج ← جـ جا

چ ← چـ چا

گ ← گـ گا گی گے

❖ ❖ ❖

पाठ - 7

- इस पाठ में ی/ے और ر के जोड़ सिखाए जाएँगें। ध्यान दें कि यह शुरू में और आख़िर में किस तरह लिखे जाते हैं:

ये + अलिफ़		सीन + छोटी ये			ड़े		ज़े
یا	لا	کر	ی	ے	ڑ	ی	ز
या		कर	सी		ड़		ज़

- नीचे के शब्दों को दो तीन बार पढ़ें। ध्यान दें कि पहले शब्द 'दर्ज़ी' में ر (रे) के ऊपर छोटा सा निशान है। इसका मतलब है कि ر (रे) हलंत है, यानि इसके बाद कोई स्वर नहीं है। यहाँ शब्द dara-zi नहीं बल्कि darzi है। उर्दू में इस निशान को जज़्म कहते हैं :

آیا	درزی
आया	दर्ज़ी

لایا	کر	سی	کپڑے
लाया	कर	सी	कपड़े

❖ ध्यान दें कि ا (अलिफ़) के समान د, ڈ, ذ, ر, ڑ, ز, و सभी non-connector अक्षर हैं, अर्थात ये अपने बाद आने वाले अक्षरों से मिलाकर नहीं लिखे जाते। इन्हें ध्यान से दो तीन बार पढ़ें :

ڈر	در	زر	ز
डर	दर	ज़र	ज़

زرد	درد	ْ
ज़र्द	दर्द	जज़्म

وردی	زردی	درزی
वर्दी	ज़र्दी	दर्ज़ी

❖ ध्यान से देखें कि ک (काफ़) के बाद ر (रे) कैसे जोड़ा जाता है। ر (रे) non-connector है। ऐसे अक्षरों के बारे में आपको जानकारी दी जा चुकी है कि वे अपने बाद वाले अक्षर से मिलाकर नहीं लिखे जा सकते, लेकिन अपने से पहले वाले अक्षर से मिला कर लिखे जा सकते हैं :

कर   रे + काफ

کر   ر   ک ← ک

कप   पे + काफ़

کپڑے   ڑے   کپ   کپ   پ   ک ← ک

❖ س एवं ی के जोड़ों को ध्यान से पढ़ें :

س ← سـ ی سی

سا سو سے

से सो सा

या अलिफ़ + ये

ی ← یـ ا یا

آیا لایا گایا

गाया लाया आया

درزی آیا

نانا کا درزی آیا

❖ अब आप नीचे के पाठ को आसानी से पढ़ सकते हैं। अभ्यास के लिए ऊँचे स्वर में दो तीन बार पढ़ें :

کپڑے لایا

کپڑے سی کر لایا

سارا کے کپڑے سی کر لایا

درزی کو کپڑے دو

درزی سے کپڑے لو

درزی کو پانی دو

درزی بازار سے آیا

درزی کو آنے دو

❖ इस पाठ के नए जोड़ों को चार्ट में दिखाया गया है। ध्यान से पढ़ें :

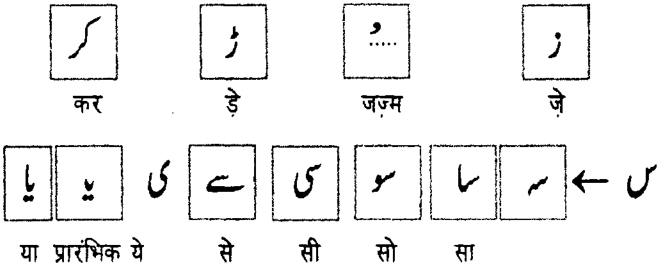

❖ शब्दावली :

ज़र	- सोना, स्वर्ण
दर	- द्वार, दरवाज़ा
ज़र्द	- पीला
ज़र्दी	- पीलापन

❖ ❖ ❖

पाठ - 8

❖ इस पाठ में दो चश्मी हे ھ (दो आँखों वाली हे) सिखाई गई है, जिसका प्रयोग उर्दू में हकार आवाज़ों के लिए होता है। उदाहरण के तौर पर उर्दू ک (काफ़) में दो चश्मी हे जोड़ने से کھ बन जाता है। नीचे के अक्षरों को ध्यान से देखें:

ھ	گھ	کھ
ह	घ	ख

❖ नीचे के शब्दों में छोटे से निशान ...... को ध्यान से देखें। इसको ज़बर कहते हैं। यह छोटे स्वर /अ/ के लिए आता है, जैसे अलिफ़ ज़बर बे /अब/, घ ज़बर रे /घर/, चे ज़बर लाम /चल/।

❖ आगे के शब्दों में चिह्न ज़ेर ..... और चिह्न पेश ..... को भी ध्यान से देखें जो छोटे स्वर /इ/ और छोटे स्वर /उ/ के लिए लिखे जाते हैं। उदाहरण के लिए देखें अलिफ़ ज़ेर सीन /इस/, अलिफ़ पेश सीन /उस/। छोटे स्वरों के इन तीन चिह्नों को अच्छी तरह समझ लेना बहुत ज़रूरी है।

उर्दू की आम लिखाई छपाई में इन चिह्नों का प्रयोग नहीं होता क्योंकि पढ़ते समय इनका अंदाज़ा हो जाता है, फिर भी जब किसी शब्द का सही उच्चारण ज़ाहिर करना हो तो इनका लगाना ज़रूरी है।

اَب گھر چَل

चल घर अब

سَب سے مِل اِس اُس سے مِل

मिल से उस इस मिल से सब

چُپ رَہ کَر سُن کھانا کھا

खा खाना सुन कर रह चुप

❖ नीचे के आसान शब्दों में ज़ेर, ज़बर और पेश को ध्यान से पढ़ें और इनकी आपस में तुलना करें।

سَب	سَ ب	رَب	اَب	ـَ	ज़बर
सब	सब	रब	अब	अ	

مِل	مِ ل	اِن	اِس	ـِ	ज़ेर
मिल	मिल	इन	इस	इ	

سُن	سُ ن	اُن	اُس	ـُ	पेश
सुन	सुन	उन	उस	उ	

खाना	अलिफ़ + ख		
کھانا	ا	کھ	کھ

घर	रे	ज़बर घ	
گھَر	ر	گھَ	گھ

रह	हे	ज़बर रे	
رَہ	ہ	رَ	ر

❖ अब आप आसानी से नीचे का पाठ पढ़ सकते हैं। अभ्यास के लिए इसे दो तीन बार पढ़ें :

اَب گھَر چَل

گھَر چَل دارا گھَر چَل

تارا گھَر چَل

اِس سے مِل

اُس سے مِل

اِن سے مِل

اُن سے مِل

سَب سے مِل

❖ छोटे स्वरों के चिह्नों पर नज़र रखें और नीचे के पाठ को ऊँचे स्वर में पढ़ें :

گانا سُن

تارا کا گانا سُن

چُپ رَہ کَر سُن

گانا دِل سے سُن

رَب سے ڈَر

کام کَر سارا کام کَر

کھانا کھا اَب سو جا

❖ नीचे लिखे छोटे स्वर पर ध्यान दें। इस पाठ में जो नई चीज़ें सिखाई गई हैं, नीचे के चार्ट में दर्ज हैं। इन्हें दोहरा लें ताकि याद हो जाएं :

छोटी हे	घ	ख	पेश	ज़ेर	ज़बर
ہ	گھ	کھ	ـُ	ـِ	ـَ
ह	घ	ख	उ	इ	अ

❖ ❖ ❖

पाठ - 9

❖ इस पाठ में हकार आवाज़ों और कुछ दूसरी ख़ास बातों को सिखाया गया है। ہ (छोटी हे) जब शुरू में आती है तो दो हुक से लिखी जाती है। अक्षर و (वाव) आम तौर पर /ओ/ की आवाज़ देता है लेकिन जब ٗ (उल्टे पेश) के साथ लिखा जाता है तो यह /ऊ/ की आवाज़ देता है।इस पाठ में ء (हम्ज़ा) का प्रयोग भी पहली बार सिखाया जा रहा है। हम्ज़ा उर्दू शब्द के अंदर दो स्वरों के साथ साथ आने का सूचक है जैसे بھائی (भाई) और چھائی (छाई)। नीचे के अक्षरों को ध्यान से पढ़ें

झ	थ	फ	भ
جھ	تھ	پھ	بھ
झ	थ	फ	भ
हम्ज़ा	टे	शीन	छ
ء	ٹ	ش	چھ
	ट	श	छ

❖ नीचे के पाठ को दो तीन बार रवानी से पढ़ें। इसमें ज़ेर, ज़बर, पेश, जज़्म और उल्टा पेश का प्रयोग किया गया है। नीचे के जोड़ों को ध्यान से देखें :

بدُلی	رُت	لو
बदली	रुत	लो

بارِش آئی گرمی بھاگی جاڑا آیا

आया जाड़ा भागी गर्मी आई बारिश

رِم جھِم جَل تھَل اُون موٹا

मोटा ऊन थल जल रिमझिम

❖ नीचे के जोड़ों को ध्यान से देखें और ऊँचे स्वर में पढ़ें। एक बार पढ़ने के बाद हिन्दी अक्षरों को ढक लें और उर्दू अक्षरों को बिना किसी मदद के पढ़ें :

ب ← ﺑ د بد

बद दाल + बे

ٹ ← ﭨ ا ٹا

टा अलिफ + टे

م ← ﻣ و مو موٹا موٹی موٹے

मो वाव + मीम

ا ← اُو ن اُون بھُون نُون

नून भून ऊन नून + ऊ

ہو و ہ ← ہ

हो वाव + हे

بھائی چھائی آئی ی ء ← آ

भाई छाई आई ई हम्ज़ा आ

پر بر سر ر ← س

पर बर सर रे सीन

❖ अब आप आसानी से नीचे का पाठ पढ़ सकते हैं। इसको दो तीन बार पढ़ें ताकि रवानी से पढ़ सकें :

لو رُت بدُلی

ساوَن آیا

کالے کالے بادَل لایا

رِم جھم رِم جھم پانی برُسا

پھِر رُت بدلی

جاڑا آیا

موٹے اُونی کپڑے لایا

سردی آئی سردی آئی

سی سی سی سی سی سی سی سی

अब इस चार्ट को ध्यान से देखें। जो नई बातें आप ने इस पाठ में सीखीं हैं वे सब इन ख़ानों में हैं। इनको दोहरा लें और याद कर लें :

بھ	پھ	تھ	جھ	چھ
ش	ٹ	ہ	ؤ	ُ

पाठ - 10

❖ इस पाठ में पाँच नए अक्षर और कुछ दूसरी छोटी छोटी बातें सिखाई गई हैं। ध्यान से देखें कि दो चश्मी हे ھ जब ٹ (टे) से मिलाई जाती है तो अक्षर ٹھ (ठ) बन जाता है। यह बात भी स्मरणीय है कि अनुनासिक स्वर जब शब्द के आख़िर में आता है, जैसे امّاں (अम्माँ) तो ں (नून) बिना नुक़्ते के लिखा जाता है। अक्षर و (वाव) और अक्षर ے (ये) जब शब्दों के बीच में आते हैं तो किस तरह लिखे जाते हैं, यह भी नीचे बताया गया है। अक्षर ی (ये) अपने बाद आने वाले अक्षरों से मिला कर लिखा जाता है, जैसे زَید (ज़ैद) :

खे	خ	ख़	خُدا	ख़ुदा
काफ़	ق	क़	قُدرَت	क़ुदरत
बड़ी हे	ح	ह	حامِد	हामिद
से	ث	स	وارِث	वारिस
	...َو	औ	اَور	और
	ـَـے	ऐ		
	...َ	ऐ	زَید	ज़ैद
ज़ोए	ظ	ज़	نَظَر	नज़र
ठ	ٹھ	ठ	بَیٹھ	बैठ
नून गुन्नाँ	ں	ँ	امّاں	अम्माँ

❖ नीचे के शब्दों पर ध्यान दें और दो तीन बार पढ़ें :

ہوئی	رات	ڈوبا	سورج
हुई	रात	डूबा	सूरज

❖ ध्यान दें कि शब्द /अम्माँ/ में जब م (मीम) की आवाज़ दो बार आती है तो इसको छोटे चिह्न ّ (तशदीद) से लिखते हैं। उर्दू में तशदीद किसी भी अक्षर की दोहरी

आवाज़ का निशान है। नीचे के शब्दों में बीच की ے (बड़ी ये) के जोड़ पर भी ध्यान दें :

ام م ← مّ ں امّاں ابّا منّا

मुन्ना अब्बा अम्माँ ँ मम

مَ ے ← یـ ں مَیں زَید بَیٹھ

बैठ ज़ैद मैं ँ ऐ ऐ म

سُن ے ← یـ ں سُنیں بُنیں کریں ڈریں

डरें करें बुनें सुनें ँ ए ए सुन

✤ आप को पहले बताया जा चुका है कि उर्दू में (हम्ज़ा) शब्द में दो स्वरों के एक साथ आने के लिए प्रयोग होता है। हम्ज़ा अक्षर के ऊपर लगाया जाता है। ध्यान से देखें और पढ़ें :

جا ٔ ← ے جائے آئے کھائے گائے

गाए खाए आए जाए ए + जा

جائے ← ئیـ ں جائیں آئیں کھائیں گائیں

गाएँ खाएँ आएँ जाएँ ँ ए ए जा

ہو ٔ ← ی ہُوئی آئی کھائی بھائی

भाई खाई आई हुई ई + हु

❖ नीचे ل (लाम) और ہ (हे) के जोड़ दिखाए गए हैं। ध्यान से पढ़ें:

ک ل	←	کل	نِ کل	نِکل	نِکلا	نِکلے	نِکلیں
कल		कल	कल नि	निकल	निकला	निकले	निकलें

ہ	←	ہ	ہی	ہم
ह		ह	ही	हम

ک ہ ا	←	کہا	نی	کہانی
क ह आ		कहा	नी	कहानी

ت م ا	←	تما	شا	تماشا
त म आ		तमा	शा	तमाशा

❖ अब आप नीचे का पाठ आसानी से पढ़ सकते हैं। ऊँचे स्वर में दो तीन बार पढ़ें ताकि रवानी आ जाए :

سُورج ڈُوبا

رات ہُوئی

آسمان پر تارے نِکلے

خُدا کی قُدرَت کا تَماشا نَظر آیا

حامد اور زَید نے راستے میں رُک کر

وارِث سے کہا :

آج گھر جاتے ہی دونوں

آگ کے پاس بَیٹھ جائیں گے

اَور نانی امّاں سے کہانی سُنیں گے

❖ नीचे के चार्ट को ध्यान से देखें। इस पाठ की नई बातें इसमें दर्ज हैं। दोहरा लें ताकि याद हो जाएँ :

काफ़	ज़ोए	ख़े	हे	से
ق	ظ	خ	ح	ث
क़	ज़	ख़	ह	स

तशदीद			नून गुन्ना	ठ
ّ	ـَے	َو	ں	ٹھ
दोहराव चिह्न	ऐ	औ	ँ	ठ

❖ ❖ ❖

पाठ - 11

❖ इस पाठ में गाँव के मेले का दृश्य है। इसमें जो नए अक्षर सिखाए गए हैं उनमें ذ (ज़ाल) और ض (ज़्वाद) विशेषकर ध्यान देने योग्य हैं। इनकी और अक्षर ز (ज़े) की आवाज़ एक है यानि /ज़/ जो आप पहले पढ़ चुके हैं। इसी तरह ط (तोए) की आवाज़ भी वही है जो ت (ते) की है। उर्दू में एक आवाज़ के लिए कई कई अक्षरों का होना इस बात का संकेत है कि यह अक्षर भिन्न भिन्न स्रोतों से आए हैं।

अक्षर ژ (ज़्हे) उर्दू में केवल गिने चुने फ़ारसी शब्दों में आता है। इसी तरह و (ख़ामोश वाव) भी, जो नीचे की छोटी लकीर से दिखाई गई है, बहुत कम शब्दों में आती है। फिर भी इन बातों का जानना बहुत ज़रूरी है। नीचे के शब्दों को ध्यान से पढ़ें और जोड़ों पर ध्यान दें :

میلے کی سیر

ग़ैन		ऐन		ज़ाल	
باغ	غ	عَورَت	ع	ذَرا	ذ
बाग़	ग़	औरत	स्वर अ	ज़रा	ज़

तोए		ज़्वाद		स्वाद	
طرح	ط	ضَمِیر	ض	صابِرَہ	ص
तरह	त	ज़मीर	ज़	साबिरा	स

ढ		फ़े	
ڈھول	ڈھ	صاف	ف
ढोल	ढ	साफ़	फ़

वाव		झ़े	
خوش	و	اَژدَہا	ژ
ख़ुश	ख़ामोश वाव	अज़दहा	

❖ नीचे के शब्दों में ع (ऐन), ص (स्वाद) और ط (तोए) को सिखाया गया है। ध्यान से पढ़ें :

ऐन

ع ← عَو رَت عَورَت

औ रत औरत

स्वाद

ص ← صـ ا صاف صابِرَہ

स + आ साफ़ साबिरा

रे तोए

ط ر ← طَر ف طَرَف

तरफ़ फ़ तर र त

❖ पिछले पाठ में आप पढ़ चुके हैं कि ی (ये) जब बीच में आता है तो दो नुक़्तों से लिखा जाता है, जैसे سَیل , بَیل । आम तौर पर ये की आवाज़ /ए/ की होती है लेकिन यह /ऐ/ ओर /ई/ के लिए भी प्रयोग में लाया जाता है। उदाहरण के तौर पर ये से पहले के अक्षर पर अगर ज़बर का चिह्न लगाया जाए ता ये /ऐ/ की आवाज़ देता है। ये की तीसरी आवाज़ /ई/ की है जैसे بھائی /भाई/, چھائی /छाई/, آئی /आई/। यही आवाज़ जब शब्द के बीच में आए तो /ए/ और /ऐ/ की आवाज़ से अलग ज़ाहिर करने के लिए खड़े ज़ेर को प्रयोग में लाया जाता है। नीचे के शब्दों को पढ़ें तथा इनमें खड़े ज़ेर के प्रयोग को ध्यान से देखें:

ب ی ← ی ن بِین تِین دِین رِیچھ

रीछ दीन तीन बीन न ई ई ब

ضَمِیر چِیز پِیلا نِیلا

ज़मीर चीज़ पीला नीला

❖ नीचे के जोड़ों को ध्यान से देखें और ऊँचे स्वर में पढ़ें :

ہَے	ےَ	ہَ	←	ہ
है	ऐ	ह		ह

ہَیں	ں	ہَیـ	ے	ہَ
हैं	ँ	है		है

رہے	رہوں	رہی	رہا	ہا	←	ا	ہ
रहे	रहूँ	रही	रहा	हा		आ	ह

بم	بچ	بج	ج	بـ	←	ب
बम	बच	बज	ज	ब		ब

تُم	م	تـ	←	ت
तुम	म	त		त

❖ अब आप नीचे का पाठ आसानी से पढ़ सकते हैं। इसमें गाँव के मेले का वर्णन है :

آج میلا لگا ہَے۔ بچّے بُوڑھے مَرد

اَور عَورتیں سبھی چلے آ رہے ہَیں۔ صابِرَہ بھی

آئی ہَے۔ ضَمیر بھی

آیا ہَے۔ رادھا

اور رام بھی آئے

ہَیں۔ سب نے

صاف کپڑے پہنے

ہَیں۔ باغ میں بندر

کا ناچ ہو رہا ہَے۔

ریچھ والا تماشا دِکھا رہا ہَے ۔ ڈھول بھی
بج رہا ہَے ۔ بچّے خُوش ہو رہے ہَیں ۔ اِدھر
اُدھر بھاگ رہے ہَیں ۔ نیلے پیلے لال اور
ہَرے کپڑے پہنے ہوئے ہَیں ۔ کُچھ بچّے
جھُولا جھُول رہے ہَیں ۔ توتے والا توتے بیچ
رہا ہے ۔ سپیرا بین بجا رہا ہے ۔ نیچے اَژدہا
بھی ہے ۔ ذرا دُور حلوائی مٹھائی بیچ رہا
ہے ۔ بچّے خُوشی خُوشی کھا رہے ہَیں ۔ طرح
طرح کی چیزیں بِک رہی ہَیں ۔ ہر طَرَف
چَہل پَہل ہے ۔

❖ **नीचे के चार्ट में सब नई सीखी हुई बातें आ गई हैं। इनको दोहराएँ और याद करें :**

ये	वाव	ढ	फ़े	ग़ैन	ऐन	तोए	ज़्वाद	स्वाद	ज़ाल	
ئ	وٖ	ڈھ	ف	غ	ع	ط	ض	ص	ـذ	ذ
ई	खामोश वाव	ढ	फ़	ग़	अ	त	ज़	स		ज़
↓					↓	↓	↓	↓		
بین					عَو	طَر	ضم	صا		
बीन					औ	तर	ज़म	सा		

❖ शब्दावली :

ज़मीर	- अंतरात्मा; पुरुषों का एक नाम
दीन	- धर्म
साबिरा	- स्त्रियों का एक नाम; हर हालत में ईश्वरेच्छा पर निर्भर रहने वाली

❖ ❖ ❖

पाठ 12

❖ इस पाठ में आप भारत की राजधानी देहली के बारे में पढ़ेंगे। इसमें ع (ऐन), غ (ग़ैन) और ہ (हि) के जोड़ों पर ख़ास तौर से ध्यान दिया गया है। ध्यान से पढ़ें और छोटे चिह्नों पर भी नज़र रखें :

ہَماری راج دھانی

धानी राज हमारी

یہ شَہر عَذرا بَعد شَمع شُجاع

शुजा शमा बाद अज़रा शहर यह

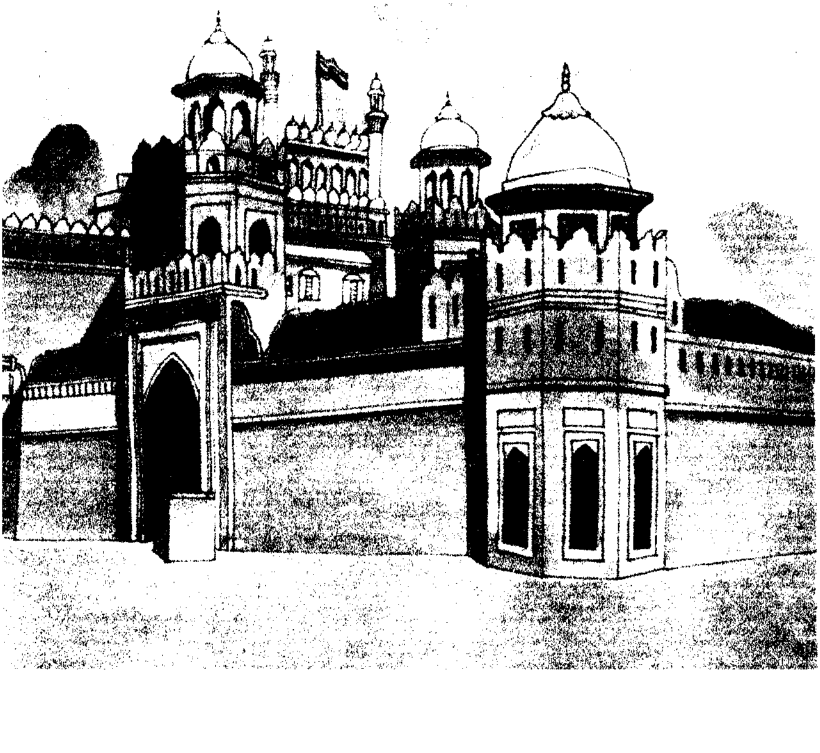

تیغ	بغل	غریب
तेग	बग़ल	ग़रीब

❖ उर्दू में /ह/ की आवाज़ के आस पास के छोटे स्वर उच्चारण में प्रभावित होते हैं। इन आवाज़ों के उच्चारण में हिंदी और उर्दू में थोड़ा सा अंतर है। नीचे के शब्दों को ध्यान से पढ़ें :

یہ	یہ	ہ	ی
यह	यह	ह	य
شہر	شہر	ر ہ	ش
शहर	शहर	र ह	श

❖ नीचे के शब्दों में ع (ऐन) की शुरु की, बीच की, आख़िरी मिली हुई और बग़ैर मिली हुई शक्लों को दिखाया गया है। इनमें से कुछ को आप पहले पढ़ चुके हैं, बाक़ी को पढ़ना और समझना आसान है :

عادِل	عذرا	را	عذ	ذ ع
आदिल	अज़रा	रा	अज़	ज़ अ
	بعد		بعد	د ع ب
	बाद		बाद	द अ ब
جمع	شمع		شمع	ع م ش
जमा	शमा			अ म श

وِداع	شُجاع	←	ع	ا	ج	شُ
विदा	शुजा		आ		ज	शु

❖ अक्षर غ (ग़ैन) के जोड़ भी इसी तरह हैं। ध्यान से पढ़ें :

دماغ	داغ	باغ	←	غ	ا	ب
दिमाग	दाग़	बाग़		ग़	आ	ब

غار	غَریب	غَور	ر	غَو	و	غَ
ग़ार	गरीब	ग़ौर	र	ग़ौ	औ	ग़

مَغرِب	مَغرُور	بَغَل	بَغَل	ل	غَ	بَ
मग़रिब	मग़रूर	बग़ल	बग़ल	ल	ग़	ब

تیغ	تیغ	غ	ے	ت
तेग़	तेग़	ग़	ए	त

❖ नीचे के शब्दों में ء (हम्ज़ा) का प्रयोग है जो आप पहले सीख चुके हैं। ध्यान से पढ़ें :

گئی	گئی	ی	ء	گ
गई	ग + ई	ई	+	ग
گئے	گئے	ے	ء	گ
गए	ग + ए	ए	+	ग

❖ अब नीचे का पाठ पढ़ें जो देहली के बारे में है। यह बहुत आसान है:

یہ دہلی ہے

دہلی ہماری راج دھانی ہے

دہلی بہت بڑا شہر ہے

دہلی ہمارے دیس کا دِل ہے

عَذرا اور شمع دہلی میں رہتی ہَیں

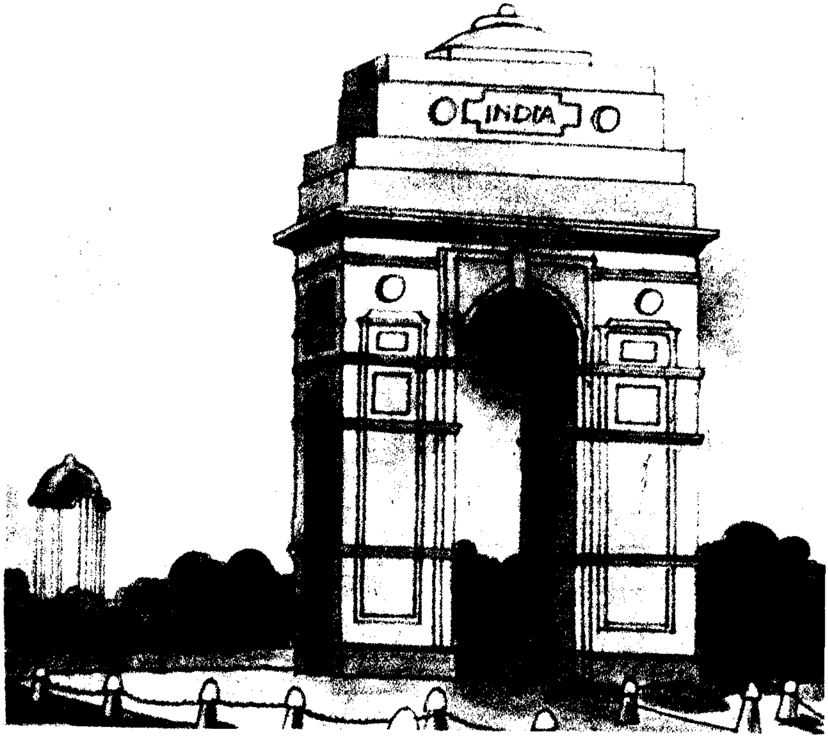

شیام اور سُشما بھی دہلی میں رہتے ہیں
سب بچّے مِل کر چڑیا گھر دیکھنے گئے
سب نے شیر دیکھے
سب نے چیتے دیکھے
ہاتھی دیکھے ہرن دیکھے مور دیکھے
سب نے چڑیا گھر کی خوب سیر کی

❖ नीचे के चार्ट को दोहराएँ और नई शक्लों को याद करें :

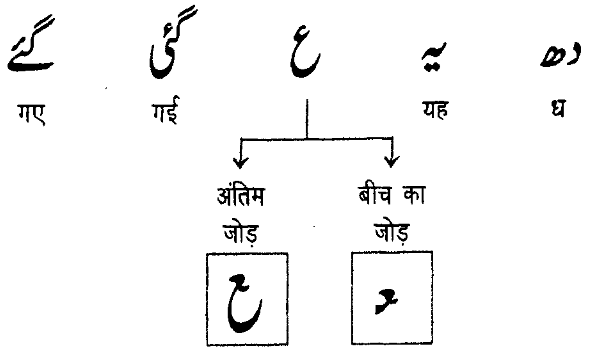

❖ शब्दावली :

शमा	- दिया, रोशनी, यहाँ एक लड़की का नाम
शुजा	- वीर, यहाँ एक लड़के का नाम
तेग़	- तलवार
बग़ल	- कांख, पार्श्व
विदा	- बिदाई
मग़रूर	- घमंडी
मग़रिब	- पश्चिम
ग़ौर	- सोच-विचार, ध्यान
जमा	- जोड़, इकट्ठा

❖ ❖ ❖

पाठ - 13

❖ अब तक आप उर्दू वर्णमाला के तमाम अक्षर और उनके अधिकतर जोड़ सीख चुके हैं। यह पाठ ईद के त्योहार के बारे में है। ध्यान से पढ़ें और देखें कि तमाम अक्षरों को आप पहचानते हैं। पहले इन शब्दों को अच्छी तरह पढ़ लें:

مُبارَک	عید
मुबारक	ईद

نَماز	عیدی	عیدگاہ	سَویرے	صُبح	مُنّی	مُنّا
नमाज़	ईदी	ईदगाह	सवेरे	सुबह	मुन्नी	मुन्ना

❖ अब नीचे का पाठ दो तीन बार पढ़ें ताकि उर्दू की रवानी का कुछ मज़ा आए :

آج عید ہَے

سب بچّے صُبح سویرے اُٹھے

بڑوں کو سلام کیا

نَہا دھو کر نئے کپڑے پہنے

سب لوگ عیدگاہ گئے

بچّے بھی عیدگاہ گئے

نَماز پڑھی

خُدا کا شُکُر اَدا کیا

سب لوگ گلے مِلے

مُنّا بولا عید مُبارک

مُنّی بولی عید مُبارک

مَینا بولی عید مُبارک

توتا بولا عید مُبارک

عید مُبارک

ابّا امّی دادی دادا

سب بچّوں کو عیدی دینا

بانو کو بھی عیدی دینا

رانو کو بھی عیدی دینا

جی ہاں سب کو عیدی دینا

عید مُبارک

❖ शब्दावली :

ईद	- मुसलमानों का त्योहार
मुबारक	- बधाई
ईदगाह	- ईद की नमाज़ पढ़ने की जगह
ईदी	- ईद पर बच्चों को दिया जाने वाला उपहार
नमाज़	- मुसलमानों की उपासना पद्धति
शुक्र	- ईश्वर के उपकारों की बड़ाई

❖ ❖ ❖

पाठ - 14

حروف

उर्दू वर्णमाला

उर्दू के सब अक्षर आप पढ़ चुके हैं। इनकी परम्परागत तरतीब यह है:

ا

ب پ ت ٹ ث

ج چ ح خ

د ڈ ذ

ر ڑ ز ژ

س ش ص ض

ط ظ ع غ

ف ق ک گ

ل م ن و

ہ ی ے

ء (ہمزہ)
हमजा

ں (نوُن غُنّہ)
नून गुन्ना

ھ (دوچشمی ہ)
दो चश्मी हे

نشانات

स्वर चिह्न

مد मद	آ अलिफ़ मद आ	آم आम	آج	دام	کام
زبر ज़बर	َ अ	اَب अब	تَب	جَب	گَب
زیر ज़ेर	ِ इ	اِس इस	اِن	دِن	گِن
پیش पेश	ُ उ	اُس उस	اُن	سُن	بُن
वाव सादा	و ओ	مو मोर	توتا	ڈھول	گول
वाव उल्टे पेश के साथ	وٗ ऊ	اوٗن ऊन	جھوٗلا	سوٗرج	بوٗڑھا
वाव पूर्व ज़बर के साथ	وَ औ	اَور और	عَورت	دَولت	کَون

ये सादा

ے — ए

میلا (मेला)   شیر   سپیرا   دیس

ये खडे ज़ेर के साथ

ي — ई

نیلا (नीला)   پیلا   بین   ریچھ

ये पूर्व ज़बर के साथ

ـَے — ऐ

سَیر (सैर)   مَینا   زَید   بَیٹھ

ّ — दोहराव चिह्न   تشدید — तशदीद

ْ — हलंत   جزم — जज़्म

وِ — ख़ामोश वाव   خاموش واو — ख़ामोश वाव

ٗ — अनुनासिकता चिह्न   (بیچ میں) نوٗن غنّہ — नून ग़ुन्ना

اً — अरबी शब्दों में 'अन' की आवाज़ देता है   تنوین — तनवीन

पाठ - 15

سارے جہاں سے اچھا

सारे जहाँ से अच्छा

❖ आप आए दिन यह तराना सुनते हैं। यह उर्दू के मशहूर कवि इक़बाल का लिखा हुआ है। हम इस पाठ पुस्तिका का अंत इस मशहूर तराने की कुछ पंक्तियों से कर रहे हैं। अपरिचित शब्दों के अर्थ शब्दावली में दिए गए हैं। ध्यान से पढ़ें और आनंद लें :

اچھا	سے	جہاں	سارے
अच्छा	से	जहाँ	सारे

ہمارا	ہندوستاں
हमारा	हिन्दोस्ताँ

بَیر	پاسباں	ہمسایہ	گُلستاں
बैर	पासबाँ	हमसाया	गुलसिताँ

سارے جہاں سے اچھا ہندوستاں ہمارا
ہم بُلبُلیں ہَیں اِس کی یہ گُلستاں ہمارا
پَربَت وُہ سب سے اُونچا ہمسایہ آسماں کا
وُہ سنتری ہمارا وُہ پاسباں ہمارا
مَذہب نہیں سِکھاتا آپس میں بَیر رکھنا
ہندی ہَیں ہم وَطن ہے ہندوستاں ہمارا

❖ शब्दावली :

जहाँ	- संसार
गुलसिताँ	- बाग़
हमसाया	- पड़ोसी
पासबाँ	- रक्षक
मज़हब	- धर्म
हिंदी	- हिंदुस्तानी
वतन	- देस

❖ ❖ ❖

उर्दू वर्णों के विभिन्न आकारों की तालिका

नाम	*वर्ण*	*पूर्व*	*मध्य*	*अंत-संयुक्त*	*अंत-असंयुक्त*	*ध्वनि*
अलिफ़	ا	آم	نام	تاتا	دادا	अ/आ
बे	ب	بابا	سبب	سب	آب	ब
पे	پ	پاپا	کپڑا	گپ	آپ	प
ते	ت	تارا	بتا	گت	بات	त
टे	ٹ	ٹال	مٹا	مٹ	ٹاٹ	ट
से	ث	ثابت	کثیر	بحث	وارث	स
जीम	ج	جاگ	بجا	بج	آج	ज
चे	چ	چاچا	بچا	بچ	ناچ	च
बड़ी हे	ح	حامد	محمود	صلح	نکاح	ह
ख़े	خ	خالی	مختلف	میخ	سوراخ	ख़
दाल	د	درزی	بدلنا	بد	درد	द
डाल	ڈ	ڈول	سڈول	ٹھنڈ	لاڈ	ड
ज़ाल	ذ	ذرا	عذرا	تعویذ	محاذ	ज़
रे	ر	رات	کرنا	کر	کار	र
ड़े	ڑ	☆	کپڑے	جڑ	پہاڑ	ड़
ज़े	ز	زید	عزیز	چیز	باز	ज़
ज़़े	ژ	ژالہ	مژگاں	پژ☆	ژاژ	ज़़
सीन	س	سورج	کسنا	کس	دس	स

शीन	ش	شور	بشیر	بخش	بارش	श
स्वाद	ص	صابر	تحصیل	شخص	خاص	स
ज़्वाद	ض	ضروری	وضو	فیض	حوض	ज़
तोए	ط	طرح	خطا	خط	شرط	त
ज़ोए	ظ	ظاہر	نظم	لفظ	الفاظ	ज़
ऐन	ع	عورت	بعد	شمع	شجاع	स्वर-जैसा
ग़ैन	غ	غریب	بغل	تیغ	باغ	ग़
फ़े	ف	فائدہ	نفع	صف	صاف	फ़
क़ाफ़	ق	قدرت	تقدیر	شفق	فاروق	क़
काफ़	ک	کالا	نکلا	ایک	ناک	क
गाफ़	گ	گانا	سگا	سگ	ساگ	ग
लाम	ل	لال	جلنا	جل	جال	ल
मीम	م	مبارک	نماز	شمیم	دام	म
नून	ن	نان	سنا	سن	پان	न
वाव	و	وادی	کورا	کو	دو	व/ओ☆☆
छोटी हे	ہ	ہونا	کہنا	کہہ/رکہ	رہ	ह
छोटी ये	ی	یاد	میل	رانی	دادی	य/ई
बड़ी ये	ے	یاد	میرا	آگے	گائے	य/ए☆☆

☆ शब्द का भाग।

☆☆ देखें भूमिका।

नोट: वर्ण का अंत-असंयुक्त आकार वर्ण के बुनियादी रूप के समान ही होता है।

उर्दू के स्वरों की तालिका

	नाम	*चिह्न*	*पूर्व*	*मध्य*	*अंत्य*	*ध्वनि*
1.	अलिफ़	آ	آج	دام	دادا	आ
2.	ज़बर	ـَـ	اَب	مَرَض	☆	अ
3.	ज़ेर	ـِـ	اِس	مِحفِل	☆	इ
4.	पेश	ـُـ	اُس	بُلبُل	☆	उ
5.	वाव	و	اوس	توتا	جو	ओ
6.	वाव	وٗ	اوٗن	جھوٗلا	جوٗ	ऊ
7.	वाव	ـَـو	اور	دَولت	جَو	औ
8.	ये	ی	اینٹ	میرا	نانی	ई
9.	ये	ے	ایک	میرا	تالے	ए
10.	ये	ـَـے	اَیسا	مینا	بَے	ऐ

नोट : शब्दारंभ में वाव और ये क्रमश: अर्धस्वर /व/ और /य/ के सूचक हैं, जैसे /वहाँ/ (وہاں) /यहाँ/ (یہاں)

❖ ❖ ❖

विराम चिह्न आदि और विशेषक चिह्न

1. लेखन संबंधी विशेषक चिह्नों के लिए पाठ-14 देखिए।

2. अधिकतर अन्य विशेषक चिह्न अँग्रेज़ी की तरह हैं।

   ۔ पूर्ण विराम का सूचक

   ، अर्ध विराम का सूचक

   ؟ प्रश्न चिह्न

   ء ईस्वी कैलेंडर का सूचक

   ھ हिजरी अर्थात इस्लामी कैलेंडर का सूचक

   ؐ हज़रत मुहम्मद के लिए प्रयुक्त आदरसूचक अरबी सूक्ति का संक्षिप्त रूप

   ؑ अन्य पैग़म्बरों के लिए प्रयुक्त आदरसूचक अरबी सूक्ति का संक्षिप्त रूप

   ؓ हज़रत मुहम्मद के साथियों एवं सम्बंधियों के लिए प्रयुक्त आदरसूचक अरबी सूक्ति का संक्षिप्त रूप

   ؒ दिवंगत वलियों और सूफ़ियों के लिए प्रयुक्त आदरसूचक अरबी सूक्ति का संक्षिप्त रूप

   ؔ कवियों के उपनाम का सूचक

❖ ❖ ❖

Books for Urdu Diploma Course

English Medium

- ★ Urdu for All
  An Introduction to Urdu Script
- ★ Ibtedai Urdu
- ★ Intekhab-e-Nasr-e-Urdu
- ★ Aasan Urdu Shairi

Hindi Medium

- ★ उर्दू सबके लिए
  उर्दू लिपि से परिचय
- ★ इब्तिदाई उर्दू
- ★ इन्तेख़ाब–ए–नस्र–ए–उर्दू
- ★ आसान उर्दू शाईरी

क़ौमी काउंसिल बराए फ़रोग़–ए–उर्दू ज़बान

قومی کونسل برائے فروغ اردو زبان

National Council for Promotion of Urdu Language

(Ministry of HRD, Department of Higher Education, Govt. of India)
West Block-1, Wing No.6, R.K. Puram, New Delhi-110066

ISBN : 978-81-7587-295-0